आभार प्रदर्शन

माँ सरस्वती देवी, ईष्ट देव तथा गुरूजनों के आशीर्वाद से मैं अपने शोधग्रन्थ प्रस्तुत करने में समर्थ हो सका हूँ। अतः उनके प्रति हृदय से असीम श्रृद्धा एवं कृतज्ञता से परिपूर्ण हूँ।

सर्वप्रथम मैं अपनी निर्देशिका आदरणीय **प्रो0 किरण टण्डन, (एम0 ए0, पी–एच्0 डी0, डी0 लिट्0, साहित्याचार्य, प्राक्तन विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल)** का हृदय से आभारी हूँ। जिन्होंने अपने निर्देशन में मुझे शोध–कार्य करने की अनुमति प्रदान की। जिन्होंने समय–समय पर मुझे उचित निर्देश एवं उपदेश, शोध कार्य की शैली से अवगत कराया एवं अपना पूर्ण सहयोग दिया तथा मेरा उचित मार्गदर्शन किया। जिससे मैं व्यर्थ के भटकाव से दूर हो गया। यह मेरा सौभाग्य है, जो मैंने आदरणीय निर्देशिका के सान्निध्य मे शोध कार्य किया।

मैं **डॉ० जया तिवारी** (प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल) एवं **डॉ० लज्जा भट्ट** (प्रवक्ता संस्कृत विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल) के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ। एवं विभागीय अन्य गुरूजनों एवं कर्मचारियों के प्रति भी हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। जिन्होंने इस शोध–कार्य में अपने परामर्श से मुझे सहयोग प्रदान किया।

मैं प्राक्तन प्राचार्य **प्रो० एम० सी० पाण्डे**, एम० बी० जी० पी० जी० कॉलेज हल्द्वानी एवं उच्च शिक्षा निदेशक, उत्तराखण्ड। एवं **डॉ० माया शुक्ला** विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग एम० बी० जी० पी० जी० कॉलेज हल्द्वानी का भी हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। जिन्होंने मुझे स्नातकोत्तर में संस्कृत विषय लेने की प्रेरणा दी। जिसके फलस्वरूप मैंने एम० ए० संस्कृत विषय से उत्तीर्ण किया एवं शोध कार्य करने में सक्षम हो पाया।

मैं अपने पूजनीय पिता **श्री महेश प्रसाद**, एवं माता श्रीमती **रजनी टम्टा** का भी हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस शोध कार्य हेतु मुझे किसी भी प्रकार की आर्थिक विपत्ति से दूर रखा तथा अपना पूर्ण सहयोग एवं स्नेह दिया। मैं अपनी पत्नी श्रीमती सुनीता टम्टा, भाई अखिलेश प्रसाद बहन आकाँक्षा और मित्र गणेश चन्द्र एवं अन्य मित्रों एवं सहपाठियों का भी हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। जिनके स्नेह सहयोग प्रोत्साहन से मैं यह शोध–कार्य पूर्ण कर पाया।

कुमाऊँ विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय के सदस्यों के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मुझे शोध कार्य के लिए सहायक पुस्तकें उपलब्ध करवाईं जिन्हें पढ़कर मैं अत्यन्त लाभान्वित हुआ एवं मेरा ज्ञानवर्धन भी हुआ।

यथासंभव प्रयत्न किये जाने पर भी शोधग्रन्थ में त्रुटियों का होना अवश्यम्भावी है। अतः आशा है कि सुधी जन एवं सहृदय विद्वजन उन्हें क्षम्य मानकर मेरे इस प्रयास को अनुग्रह की दृष्टि से देखेगें। इसी कामना के साथ मैं अपना शोधग्रन्थ सहृदय विद्वान् परीक्षकों के सम्मुख इस आशा के साथ प्रस्तुत कर रहा हूँ कि उन्हें मेरा यह प्रयास अवश्य ही पसन्द आयेगा।

आचार्य अभिनवगुप्त के शब्दों में सभी के प्रति अपनी श्रृद्धा प्रकट करता हूँ–

''ऊर्ध्वोध्वमारूहा यदर्थ तत्त्वं
धीः पश्यति श्रन्तिमवेदयन्ति।
फलं तदाद्यैः परिकल्पितानां
विवेक सोपानपरम्पराणाम्।।''

विनीत निवेदक

दिनाँक : 6 मार्च 2015

(रीतेश प्रसाद टम्टा)
संस्कृत विभाग,
कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल